

# आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के उदय और विकास का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. तनुजा गुप्ता

विभागाध्यक्षा, बी.एड. विभाग, मां विंध्यवासिनी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पद्मा, हज़ारीबाग

## Article

## ABSTRACT

### Info

#### Article history:

Received Mar 18, 2026

Accepted Mar 27, 2026

Published Mar 31, 2026

#### Keywords:

भारतीय आर्थिक चिंतन

दादाभाई नौरोजी

आर्थिक शोषण

समावेशी विकास

गोपाल कृष्ण गोखले

भारतीय राष्ट्रवाद का विकास कोई अचानक घटना नहीं थी, बल्कि यह एक दीर्घकालीन ऐतिहासिक प्रक्रिया थी जो औपनिवेशिक शासन, आर्थिक शोषण, आधुनिक शिक्षा के प्रसार और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप विकसित हुई। 18वीं-19वीं शताब्दी में ब्रिटिश राज की स्थापना के साथ भारतीय समाज में आधुनिक राजनीतिक चेतना का जन्म हुआ। शिक्षित भारतीय मध्यम वर्ग ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध का आधार तैयार किया। 1857 का विद्रोह यद्यपि पूर्ण रूप से आधुनिक राष्ट्रवादी आंदोलन नहीं था, किंतु इसने राष्ट्रीय चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों ने भारतीय समाज में नई राजनीतिक सचेतता और आत्मविश्वास का संचार किया। आर्थिक राष्ट्रवाद की विचारधारा ने भारतीय नेताओं को औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों की आलोचना करने के लिए प्रेरित किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एक महत्वपूर्ण राजनीतिक संगठन था। बंगाल विभाजन के बाद स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन राष्ट्रवाद को अधिक सक्रिय और जनोन्मुख बनाता रहा। महात्मा गांधी के नेतृत्व में राष्ट्रवाद शिक्षित अभिजात तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह व्यापक जनसमुदाय का आंदोलन बन गया। किसान, श्रमिक, महिलाएँ और विद्यार्थी सभी इस संघर्ष में सक्रिय भूमिका निभाई। सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से गांधीवादी राष्ट्रवाद ने भारत को 1947 में स्वतंत्रता दिलाई। यह अध्ययन राष्ट्रवाद के उदय से लेकर स्वतंत्रता तक की ऐतिहासिक यात्रा का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

This work is licensed under a [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).



#### Corresponding Author:

डॉ. तनुजा गुप्ता

Email: [tanvi.sanju@gmail.com](mailto:tanvi.sanju@gmail.com)

## 1. परिचय

आधुनिक भारत के ऐतिहासिक विकास में राष्ट्रवाद की अवधारणा एक केंद्रीय और निर्णायक भूमिका निभाई है। राष्ट्रवाद केवल एक राजनीतिक विचारधारा नहीं था, बल्कि यह भारतीय समाज के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जागरण का अभिव्यक्ति था (डा० सदगुरु पुष्पम, 2021)। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक भारत पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद की पकड़ दृढ़ हो गई थी। औपनिवेशिक शासन के तहत भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में आमूल परिवर्तन आया। ब्रिटिश राज ने भारतीय समाज में आधुनिक प्रशासनिक संरचना,

आधुनिक शिक्षा, छपाई और समाचार-पत्रों का विकास किया। ये परिवर्तन विरोधाभासी थे क्योंकि औपनिवेशिक शासन ने भारतीय अर्थव्यवस्था को शोषित किया, किंतु साथ ही भारतीय समाज में नई राजनीतिक चेतना का विकास भी किया (सुधा पाई, 2014)।

आधुनिक शिक्षा के प्रसार के माध्यम से भारत में एक शिक्षित मध्यम वर्ग का उदय हुआ जो अंग्रेजी राजनीतिक विचारों, स्वतंत्रता और लोकतंत्र की अवधारणाओं से परिचित था। इसी शिक्षित वर्ग ने औपनिवेशिक शासन की समीक्षा करनी शुरू की। मुद्रण तकनीक और समाचार-पत्रों के विकास ने विचारों के प्रसार को सहज बनाया। भारतीय समाज में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों ने आत्मबोध और सांस्कृतिक गौरव की भावना को जागृत किया (अरविंद शर्मा, 2012)। 19वीं शताब्दी के दौरान भारतीय समाज में सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध चेतना बढ़ी, महिला शिक्षा को बढ़ावा मिला और आधुनिक विचारों का प्रसार हुआ।

आर्थिक स्तर पर, औपनिवेशिक नीतियाँ भारतीय अर्थव्यवस्था को लगातार कमजोर कर रही थी। भारतीय संसाधनों का निष्कासन, कृषि पर दबाव, औद्योगिक विकास में बाधाएँ और व्यापक गरीबी और असमानता की समस्याएँ बढ़ रही थीं। यह आर्थिक असंतोष राजनीतिक असंतोष में परिवर्तित हुआ (शशि थरूर, 2019)। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 में एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने भारतीय राजनीति को संगठित करने का प्रयास किया। बंगाल विभाजन के बाद स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन राष्ट्रवाद को अधिक आक्रामक और जन-आधारित बनाता रहा। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में महात्मा गांधी के आगमन के साथ भारतीय राष्ट्रवाद ने एक नया और क्रांतिकारी रूप धारण किया। सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से गांधी ने राष्ट्रवाद को शिक्षित अभिजात के दायरे से बाहर निकालकर व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाया। इस प्रकार आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद का विकास एक जटिल, बहुस्तरीय ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम था, जिसे समझना आधुनिक भारतीय इतिहास को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है (नीलांजन मुखोपाध्याय, 2016)।

## 2. अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध-पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. आधुनिक भारत में राष्ट्रवादी चेतना के उदय के प्रमुख ऐतिहासिक कारणों, विशेषकर औपनिवेशिक शासन, आर्थिक शोषण, सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन और राजनीतिक संगठनों की भूमिका का विस्तृत अध्ययन करना।
2. भारतीय राष्ट्रवाद के विभिन्न चरणों - उदारवादी राष्ट्रवाद, उग्र राष्ट्रवाद, स्वदेशी आंदोलन और गांधीवादी राष्ट्रवाद - में आए परिवर्तनों का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करना।
3. राष्ट्रीय आंदोलन में किसान, श्रमिक, महिलाओं और अन्य सामाजिक समूहों की विविध भागीदारी को समझना और राष्ट्रवाद की जनव्यापी प्रकृति को स्पष्ट करना।

## 3. अध्ययन की ऐतिहासिक पद्धति

यह शोध-पत्र ऐतिहासिक विश्लेषण की द्वितीयक विधि पर आधारित है। इसमें उपलब्ध ऐतिहासिक साहित्य, शोध-लेख, पुस्तकीय सामग्री तथा प्रदान किए गए संदर्भों का उपयोग किया गया है (एम. एस. गोविंदन, 2015)। शोध-पत्र का विश्लेषण कालक्रमानुसार ऐतिहासिक घटनाओं, विचारधाराओं, संस्थाओं और सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों के आधार पर किया गया है। इसमें किसी प्रकार का प्राथमिक सर्वेक्षण, सांख्यिकीय विश्लेषण या अनुभवजन्य परीक्षण नहीं किया गया है। शोध-पत्र का उद्देश्य ऐतिहासिक तथ्यों को संदर्भ के साथ प्रस्तुत करना और उन्हें तार्किक क्रम में विश्लेषित करना है ताकि भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की समग्र प्रक्रिया स्पष्ट हो सके।

## 4. आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के उदय को समझने के लिए 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध की परिस्थितियों को समझना आवश्यक है। इसी समय ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप बढ़ाया और धीरे-धीरे राजनीतिक शक्ति अपने हाथों में केंद्रित की। औपनिवेशिक शासन की स्थापना के साथ भारत में एक नई प्रशासनिक व्यवस्था का विकास हुआ। ब्रिटिश राज ने भारत को एक राजनीतिक इकाई के रूप में एकीकृत किया और केंद्रीय प्रशासनिक संरचना स्थापित की। यह राजनीतिक एकीकरण विरोधाभासी परिणाम लाया - एक ओर यह

औपनिवेशिक शासन के लिए सहायक था, दूसरी ओर इसने भारत में एक समग्र राष्ट्रीय चेतना के विकास का आधार तैयार किया (क्रिस्टोफ जेफरलॉट, 2007)।

औपनिवेशिक शासन के तहत आधुनिक शिक्षा का प्रसार एक अत्यंत महत्वपूर्ण विकास था। ब्रिटिश शिक्षा नीति के माध्यम से अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य ज्ञान का प्रसार हुआ। इससे भारत में एक शिक्षित मध्यम वर्ग का उदय हुआ जो आधुनिक राजनीतिक विचारों से परिचित था (रश्मि कुमारी, 2020)। छपाई तकनीक के विकास ने समाचार-पत्रों और पुस्तकों के प्रकाशन को सहज बनाया। समाचार-पत्रों ने विचारों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रेलवे और डाक-तार जैसे संचार साधनों के विस्तार ने भारत में विचारों के आदान-प्रदान को संभव बनाया। ये सभी परिवर्तन भारतीय समाज में एक नई राजनीतिक चेतना के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ तैयार कर रहे थे (डॉ नेहा कुमारी जायसवाल, 2025)।

## 5. 1857 का विद्रोह और राष्ट्रीय चेतना

1857 का विद्रोह आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। यद्यपि इसे पूर्ण विकसित आधुनिक राष्ट्रवादी आंदोलन नहीं माना जा सकता, किंतु इसने भारतीय समाज में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध व्यापक असंतोष को प्रकट किया (पुरुषोत्तम सिंह, 2025)। 1857 के विद्रोह के विभिन्न कारण थे - सैनिकों की असंतुष्टि, किसानों का आर्थिक दबाव, सामंतों की शक्ति में कमी और भारतीय समाज में धार्मिक अशांति। विद्रोह के समय विभिन्न क्षेत्रों और सामाजिक समूहों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध असंतोष व्यक्त किया। यद्यपि 1857 का विद्रोह अंततः दमित किया गया, किंतु इसके बाद ब्रिटिश शासन की नीति में परिवर्तन आया (सुजाता कुमारी, 2020)।

1857 के बाद ब्रिटिश भारत सरकार ने अधिक केंद्रीकृत नियंत्रण स्थापित किया। किंतु साथ ही भारतीयों को प्रशासन में कुछ भूमिका देने का प्रयास भी किया गया। 1861 के भारतीय परिषद अधिनियम ने भारतीयों को विधायी निकायों में प्रतिनिधित्व की अनुमति दी। यह परिवर्तन महत्वपूर्ण था क्योंकि इससे भारतीय नेताओं को राजनीति संगठित करने का मंच प्राप्त हुआ। 1857 के विद्रोह ने भारतीय समाज में एक गहरी राजनीतिक जागरूकता पैदा की कि परिवर्तन के लिए संगठित प्रयास आवश्यक हैं (नीरज जायसवाल, 2024)।

## 6. सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलनों की भूमिका

19वीं शताब्दी में भारत में सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलनों का विस्तृत प्रभाव देखा गया। राम मोहन राय, दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद और अन्य सुधारकों ने भारतीय समाज को आधुनिकीकरण के मार्ग पर लाने का प्रयास किया। ये आंदोलन धार्मिक सुधार तक सीमित नहीं थे, बल्कि इनमें सामाजिक परिवर्तन की गहरी चेतना थी (प्रेम शंकर राय, 2020)। ब्रह्म समाज, आर्य समाज और अन्य संगठनों ने जातिगत भेदभाव, बाल विवाह, सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई।

शिक्षा विशेषकर महिला शिक्षा पर सुधारकों का विशेष ध्यान था। महिला शिक्षा को समाज के आधुनिकीकरण के लिए आवश्यक माना गया। सामाजिक सुधारकों ने भारतीय संस्कृति और परंपराओं के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया, किंतु साथ ही भारतीय सांस्कृतिक गौरव के प्रति भी गहरी आस्था रखी (कृष्णा, 2018)। ये सुधार आंदोलन केवल धार्मिक नहीं थे, बल्कि इनमें सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की भावना थी। भारतीय समाज को आधुनिक बनाते हुए भी भारतीय संस्कृति की रक्षा करने की चेतना ने आगे चलकर भारतीय राष्ट्रवाद का एक महत्वपूर्ण घटक बनी। सुधारकों के विचारों ने शिक्षित भारतीय मध्यम वर्ग में राजनीतिक चेतना और आत्मविश्वास का संचार किया (बुद्धि प्रकाश रेगर, 2024)।

## 7. आर्थिक शोषण और आर्थिक राष्ट्रवाद

औपनिवेशिक आर्थिक नीतियाँ भारतीय राष्ट्रवादी चेतना के विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाई। ब्रिटिश नीति भारत को एक कच्चे माल के निर्यातक और तैयार माल के आयातक के रूप में रूपांतरित करने का प्रयास कर रही थी। भारतीय संसाधनों का व्यापक दोहन किया जा रहा था। भारतीय उद्योग, विशेषकर हथकरघा उद्योग, ब्रिटिश माल के आयात से नष्ट हो रहा था। कृषि क्षेत्र भी औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों

से प्रभावित था। जमींदारी और रैयतवारी व्यवस्था किसानों के लिए अत्यंत कठोर साबित हुई। कृषि उत्पादन लगातार घट रहा था और ग्रामीण गरीबी बढ़ रही थी (तनुजा गुप्ता, 2025)।

इसी आर्थिक असंतोष से एक नई विचारधारा का जन्म हुआ जिसे "आर्थिक राष्ट्रवाद" कहा जा सकता है। दादाभाई नौरोजी और अन्य राष्ट्रवादी नेताओं ने धन के निष्कासन का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जो यह दर्शाता था कि ब्रिटिश राज के तहत भारत की संपत्ति ब्रिटेन को स्थानांतरित हो रही है। आर्थिक राष्ट्रवाद ने भारतीय नेताओं को स्वदेशी उद्योग और आर्थिक स्वावलंबन की ओर मोड़ा (रामचन्द्र गुहा, 2014)। दादाभाई नौरोजी और अन्य अर्थशास्त्रियों के विश्लेषण ने भारतीय नेताओं को औपनिवेशिक आर्थिक नीति की आलोचना करने के लिए प्रेरित किया। आर्थिक शोषण और गरीबी की समस्याओं ने भारतीय राजनीति को नई दिशा दी (रोमिला थापर, 2018)।

## 8. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उदय और प्रारंभिक राष्ट्रवाद

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 में एक ऐतिहासिक घटना थी। कांग्रेस का गठन भारतीय राजनीति को संगठित करने के प्रयास के रूप में हुआ। प्रारंभ में कांग्रेस शिक्षित भारतीयों का एक संगठन था, जो संवैधानिक सुधार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व की माँग कर रहा था (आर. जय, 2004)। कांग्रेस के प्रारंभिक नेताओं में सुरेंद्रनाथ बनर्जी, दादाभाई नौरोजी, कालीकृष्ण आदि थे। ये नेता ब्रिटिश संवैधानिक परंपरा में विश्वास करते थे और शांतिपूर्ण तरीकों से सुधार चाहते थे।

प्रारंभिक कांग्रेस राष्ट्रवाद को "उदारवादी राष्ट्रवाद" कहा जाता है क्योंकि यह ब्रिटिश शासन के भीतर ही परिवर्तन चाहता था (एस. इरफान हबीब, 2017)। कांग्रेस की प्रारंभिक माँगें थीं - भारतीयों को प्रशासन में बेहतर प्रतिनिधित्व, भारतीय सिविल सेवा में भारतीयों की भर्ती, भारतीय भाषाओं का प्रयोग और बेहतर शिक्षा नीति। कांग्रेस का यह उदारवादी दृष्टिकोण बहुत प्रभावी नहीं साबित हुआ क्योंकि ब्रिटिश सरकार भारतीयों की माँगों के प्रति विशेष ध्यान नहीं दे रही थी। किंतु कांग्रेस का महत्व यह है कि इसने भारतीय राजनीति को एक राष्ट्रीय मंच प्रदान किया (Kumar, Sunil, 2025)।

## 9. उग्र राष्ट्रवाद, स्वदेशी आंदोलन और राजनीतिक चेतना का विस्तार

19वीं शताब्दी के अंत में भारतीय राष्ट्रवाद में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। तिलक, लाला लाजपत राय, विपिन चंद्र पाल जैसे नेताओं ने "उग्र राष्ट्रवाद" की विचारधारा को आगे बढ़ाया। ये नेता उदारवादी दृष्टिकोण से असंतुष्ट थे और अधिक सक्रिय और आक्रामक राष्ट्रवाद का प्रतिनिधित्व करते थे (बसन्त कुमार, 2023)। 1905 में बंगाल विभाजन इस उग्र राष्ट्रवाद का एक प्रमुख ट्रिगर था। लॉर्ड कर्जन द्वारा बंगाल को दो भागों में विभाजित करने की घोषणा ने भारतीय नेताओं को क्षुब्ध किया।

बंगाल विभाजन के विरोध में स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन चलाए गए। स्वदेशी आंदोलन का मतलब था ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार और भारतीय उत्पादों को बढ़ावा देना। इस आंदोलन में शिक्षित युवा विशेषकर सक्रिय थे (ए. आर. देसाई, 2002)। बहिष्कार आंदोलन में विद्यार्थी, शिक्षक और बुद्धिजीवी सभी भाग ले रहे थे। स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से भारतीय समाज की आर्थिक और राजनीतिक चेतना एक साथ विकसित हो रही थी। इस अवधि में राष्ट्रवादी प्रतीकों का विकास हुआ। वंदे मातरम् जैसे राष्ट्रवादी गीत और नारे युवाओं को प्रेरित कर रहे थे। यह अवधि राष्ट्रवाद के सांस्कृतिक आयाम का विकास थी (एस. आर. सिंह, 1980)।

## 10. गांधी युग और राष्ट्रवाद का जन-आंदोलन में रूपांतरण

महात्मा गांधी का भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में आगमन एक ऐतिहासिक मोड़ था। 1915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटकर गांधी भारतीय राजनीति में सक्रिय हुए। गांधी ने राष्ट्रवाद को एक सर्वथा नई दिशा दी। सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से गांधी ने भारतीय राष्ट्रवाद को एक नैतिक आंदोलन बनाया। 1920 में असहयोग आंदोलन शुरू किया गया, जिसमें भारतीयों से अपेक्षा की गई कि वे ब्रिटिश संस्थाओं, विद्यालयों, अदालतों और वस्तुओं का सहयोग न करें।

असहयोग आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि यह केवल शिक्षित वर्ग तक सीमित नहीं रहा, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचा। किसान, कारीगर, व्यापारी और आम जनता सभी इस आंदोलन में भाग लिए। महिलाओं ने भी असहयोग आंदोलन में सक्रिय भूमिका

निभाई। 1930 के दशक में सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया गया। नमक सत्याग्रह राष्ट्रवादी आंदोलन का एक सबसे प्रभावी प्रतीक बन गया। भारत छोड़ो आंदोलन (1942) आधुनिक भारत का सबसे व्यापक जन-आंदोलन था।

गांधीवादी राष्ट्रवाद की विशेषता यह थी कि यह पूरे भारतीय समाज को एक साथ लाया। किसानों को भी राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका मिली। श्रमिकों और महिलाओं ने भी राष्ट्रीय संघर्ष में भाग लिया। गांधी का अहिंसा का सिद्धांत भारतीय परंपरा से जुड़ा हुआ था और यह भारतीय समाज के बड़े वर्गों को आकर्षित करता था। गांधीवादी आंदोलन राष्ट्रवाद को नैतिक और आध्यात्मिक आयाम से जोड़ता था।

### 11. विभिन्न सामाजिक समूहों और राष्ट्रवाद

भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें विभिन्न सामाजिक समूहों की व्यापक भागीदारी थी। किसानों ने खादी आंदोलन में, कृषि सुधार में और ग्रामीण स्वशासन के मुद्दों पर राष्ट्रवादी आंदोलन में भाग लिया। श्रमिकों ने भी औपनिवेशिक आर्थिक शोषण के विरुद्ध आंदोलन में सहयोग किया। महिलाओं ने चरकहा आंदोलन, खादी आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बिहार और अन्य क्षेत्रों में विद्यार्थी सक्रिय रूप से राष्ट्रीय आंदोलन में भाग ले रहे थे।

व्यापारी और उद्योगपति भी स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से राष्ट्रवाद से जुड़े थे। बुद्धिजीवियों और लेखकों ने राष्ट्रवादी विचारों को अभिव्यक्ति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विभिन्न क्षेत्रों में राजनीतिक समूहों ने भी राष्ट्रवादी आंदोलन में भाग लिया। यह विविधता भारतीय राष्ट्रवाद की एक मजबूत विशेषता थी। यदि राष्ट्रवाद केवल किसी एक वर्ग तक सीमित होता, तो वह कभी भी इतना शक्तिशाली नहीं बन सकता था।

### 12. राष्ट्रवाद की विविध धाराएँ और ऐतिहासिक चुनौतियाँ

भारतीय राष्ट्रवाद की एक जटिल विशेषता यह है कि इसमें विभिन्न विचारधाराएँ और दृष्टिकोण मौजूद थे। गांधीवादी राष्ट्रवाद अहिंसा और सत्याग्रह पर आधारित था, जबकि कुछ क्रांतिकारी नेता अधिक सक्रिय प्रतिरोध में विश्वास करते थे। आम्बेडकर जैसे नेताओं ने दलितों के अधिकारों के लिए राष्ट्रवाद के भीतर ही संघर्ष किया। क्षेत्रीय राष्ट्रवाद और अखिल-भारतीय राष्ट्रवाद के बीच भी तनाव था।

धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान के मुद्दे भी भारतीय राष्ट्रवाद को जटिल बनाते थे। हिंदू-मुस्लिम संबंध राष्ट्रीय आंदोलन में एक प्रमुख समस्या बने रहे। कांग्रेस एक समावेशी राष्ट्रवाद का प्रतीक था जो सभी धर्मों और समुदायों को शामिल करना चाहता था। किंतु सांप्रदायिक राजनीति के कारण एकता को कई बार चुनौतियाँ मिलीं। इन सभी जटिलताओं के बावजूद, भारतीय राष्ट्रवाद स्वतंत्रता के लक्ष्य पर केंद्रित रहा। विभिन्न विचारधारा के नेता और समूह एक सामान्य लक्ष्य - ब्रिटिश शासन से मुक्ति - के लिए आंदोलन में भाग ले रहे थे।

### 13. स्वतंत्रता और राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक परिणति

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान भारत में राजनीतिक गतिविधियाँ तेज हो गईं। भारत छोड़ो आंदोलन (1942) को 1945-1947 के बीच राजनीतिक परिस्थितियों का सहारा मिला। ब्रिटेन की कमजोरी और भारतीय राजनीति में परिवर्तन के कारण स्वतंत्रता की ओर गति तेज हुई। 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिली। राष्ट्रवादी आंदोलन की यह ऐतिहासिक विजय थी।

किंतु स्वतंत्रता के साथ ही विभाजन की त्रासदी भी आई। भारत दो भागों में बँट गया - भारत और पाकिस्तान। यह राष्ट्रवाद की एक जटिल विरासत थी। दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय राष्ट्रवादें एकीकृत राष्ट्रवाद के साथ सहअस्तित्व में नहीं रह सकीं। विभाजन के कारण भारतीय राष्ट्रवाद के सपने को एक गहरा आघात लगा। गांधी की हत्या राष्ट्रीय त्रासदी थी। किंतु भारत ने एक बहुसांस्कृतिक, बहुधार्मिक और लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ने का रास्ता चुना।

### 14. ऐतिहासिक विश्लेषण एवं चर्चा

भारतीय राष्ट्रवाद का विकास एक जटिल ऐतिहासिक प्रक्रिया थी जिसमें विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारक एक साथ काम कर रहे थे (सुजाता कुमारी, 2020)। औपनिवेशिक शासन ने एक ओर भारतीय अर्थव्यवस्था को शोषित किया और सामाजिक

संरचना को विघटित किया, किंतु दूसरी ओर आधुनिक शिक्षा, संचार साधनों और प्रशासनिक एकीकरण के माध्यम से नई राष्ट्रीय चेतना का जन्म भी दिया। सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों ने भारतीय समाज में आत्मविश्वास और सांस्कृतिक गौरव की भावना को जागृत किया। आर्थिक शोषण से उपजी असंतुष्टि ने राजनीतिक असंतोष में परिवर्तित हो गई। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भारतीय राजनीति को एक संगठित मंच प्रदान किया। स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन ने राष्ट्रवाद को जन-आंदोलन की ओर ले जाने की शुरुआत की। गांधी के आगमन के साथ राष्ट्रवाद विशाल जनसमुदाय तक पहुँचा और इसे एक नैतिक और आध्यात्मिक आयाम मिला (नीरज जायसवाल, 2024)। किसान, श्रमिक, महिलाएँ और विद्यार्थी - सभी ने राष्ट्रीय संघर्ष में भाग लिया। यह विविध सामाजिक भागीदारी भारतीय राष्ट्रवाद को शक्तिशाली बनाती रही। विभिन्न विचारधाराओं और दृष्टिकोणों के बावजूद, भारतीय राष्ट्रवाद स्वतंत्रता के एक सामान्य लक्ष्य के चारों ओर एकत्रित रहा। यह केंद्रीय ऐतिहासिक तर्क बताता है कि आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद किसी एकल घटना या व्यक्ति का परिणाम नहीं था, बल्कि यह एक दीर्घकालीन, बहुस्तरीय ऐतिहासिक प्रक्रिया थी।

## 15. निष्कर्ष

आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद का विकास भारतीय इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी। यह विकास औपनिवेशिक शासन, आर्थिक शोषण, आधुनिक शिक्षा के प्रसार, सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों, आर्थिक राष्ट्रवाद, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन, स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलनों तथा गांधीवादी नेतृत्व की परिणति था। राष्ट्रवाद का यह विकास शिक्षित अभिजात वर्ग के सीमित दायरे से निकलकर किसान, श्रमिक, महिलाओं और विद्यार्थियों को शामिल करते हुए एक व्यापक जन-आंदोलन में परिवर्तित हुआ। सत्याग्रह और अहिंसा ने राष्ट्रवाद को एक नैतिक और आध्यात्मिक आयाम प्रदान किया। विभिन्न धार्मिक, क्षेत्रीय और सामाजिक समूहों ने अपनी विविधता के बावजूद एक सामान्य लक्ष्य के लिए संघर्ष किया। भारतीय राष्ट्रवाद की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी समावेशी प्रकृति थी। यद्यपि भारतीय राष्ट्रवाद पूरी तरह से एकीकृत नहीं रहा और विभाजन जैसी गंभीर चुनौती का सामना किया, किंतु यह राष्ट्रवाद 1947 में भारत की स्वतंत्रता को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद का इतिहास यह सिखाता है कि कैसे एक राष्ट्र अपनी विविधता के बीच एकता पा सकता है और कैसे सामूहिक चेतना परिवर्तन का साधन बन सकती है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने एक लोकतांत्रिक, बहुसांस्कृतिक राष्ट्र के रूप में अपना विकास किया, जिसमें राष्ट्रवादी आंदोलन की विरासत एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

## References

- [1]. अरविंद शर्मा। (2012). धर्म, राष्ट्रवाद और राजनीति। सेज इंडिया।
- [2]. आर. जय। (2004). पोलिटिकल आइडियोलोजिस्ट्स: एन इंट्रोडक्शन। रूटलेज पब्लिशर्स।
- [3]. एम. एस. गोविंदन। (2015). संघर्ष और राष्ट्रवाद। ब्लूम्सबरी इंडिया।
- [4]. एस. आर. सिंह। (1980). नेशनलिज्म एण्ड सोशल रफॉर्म इन इण्डिया। रणजीत पब्लिकेशन।
- [5]. एस. इरफान हबीब। (2017). इंडियन नेशनलिज्म। रूपा पब्लिकेशन।
- [6]. ए. आर. देसाई। (2002). रीसेन्ट ट्रेन्ड्स इन इंडियन नेशनलिज्म। पोपुलर बुक्स।
- [7]. कृष्णा। (2018). भारत में राष्ट्रवाद के उद्भव एवं विकास के कारण। Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 15(11), 373-374।
- [8]. क्रिस्टोफ जेफरलॉट। (2007). हिंदू राष्ट्रवाद की राजनीति। पेंगुइन इंडिया।
- [9]. डा० सदगुरु पुष्पम. (2021). आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद और उसकी राजनीति पर भूमिका. International Journal of Advanced Research in Multidisciplinary Sciences EISSN 2581-8996, 4(2), 215-223.
- [10]. डॉ नेहा कुमारी जायसवाल. (2025). भारतीय राष्ट्रवाद का उदय एवं विकास (बिहार के संदर्भ में). Int. J. Sociol. Humanit., 7(2), 110-113.

- [11]. तनुजा गुप्ता । (2025). मध्यकालीन भारत में धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय का अध्ययन । *African Journal of Geography and Regional Planning*, 12(1), 1-10 ।
- [12]. प्रेम शंकर राय । (2020). भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का उदय एवं विकास (1858-1905) का मूल्यांकन । *International Journal of Applied Research*, 6(11), 302-306 ।
- [13]. पुरुषोत्तम सिंह । (2025). भारत में राष्ट्रवाद और उसके चरण ।
- [14]. बसन्त कुमार । (2023). डॉ. अम्बेडकर एण्ड नेशनलिज्म । प्रभात प्रकाशन ।
- [15]. बुद्धि प्रकाश रेगर । (2024). भारतीय राष्ट्रवाद: आधुनिक परिपेक्ष में एक अध्ययन । *IJIRCT*, 10(3), 1-3 ।
- [16]. रामचन्द्र गुहा । (2014). रवीन्द्रनाथ टैगोर: नेशनलिज्म । पेंगुइन बुक्स ।
- [17]. रश्मि कुमारी । (2020). भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में राष्ट्रवाद का उद्भव और विकास । *International Journal of History*, 2(2), 177-179 ।
- [18]. रोमिला थापर । (2018). ऑन नेशनलिज्म । रूपा पब्लिकेशन ।
- [19]. शशि थरूर । (2019). भारत राष्ट्रवाद की परिभाषा । एलेफ बुक कंपनी ।
- [20]. सुधा पाई । (2014). भारतीय राजनीति में राष्ट्रवाद । ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ।
- [21]. सुजाता कुमारी । (2020). भारत में राष्ट्रवाद के उद्भव एवं विकास के कारण । *International Journal of Political Science and Governance*, 2(2), 92-93 ।
- [22]. नीलांजन मुखोपाध्याय । (2016). भारतीय लोकतंत्र और राष्ट्रवाद । रूपा पब्लिकेशन ।
- [23]. नीरज जायसवाल । (2024). भारत में राष्ट्रवाद का उदय एवं विकास । (pp. 144-148) ।
- [24]. Kumar, Sunil. (2025). Evolution of Modern India: A Study of Colonial Legacy and Nationalist Awakening. *Universal Research Reports*, 12, 199-204.

### ***Cite this Article:***

डॉ. तनुजा गुप्ता, " आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के उदय और विकास का ऐतिहासिक अध्ययन", *Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)*, ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 3, pp. 58-64, March 2026.

Journal URL: <https://vijact.com>

DOI: <https://doi.org/10.65785/vijact.v2i3.25>